तअवीज़-गन्डे और उनकी शरई हैसियत

9

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़े अल्लाह तअला के लिये हैं जो सब जहानों का पालने वाला है। हम उसी की तअरीफ़ करते और उसी का शुक्र अदा करते हैं। अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है। कोई उसका साझी व शरीक नहीं और मुहम्मद सल्ललाहु अलेहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामती नाज़िल हो मुहम्मद सल्ल. पर और उनकी आल व औलाद और असहाब पर ।

अम्मा बअद !

इर्शादे बारी तआला है ''अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ पहुंचाये तो सिवाए अल्लाह के उसे कोई दूर करने वाला नहीं। अगर अल्लाह तुम्हारे साथ कोई भलाई करना चाहे तो उसके फज़्ल को कोई रोकने वाला नहीं।'' (सूरह युनुस–107 आयत)

हकीकत यह है कि फायदे ओर नुकसान का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला है। किसी मखलूक में ताकत नहीं के वह नुकसान से बचा दे, जब अल्लाह किसी को नुकसान पहुंचाने का इरादा करले। इसलिए किसी ओर से हाजत र वाई और मुश्किल कुशाई की आस लगाने या उम्मीद रखने से बेहतर है कि अल्लाह ही से दुआ की जाए ओर मदद मांगी जाए। क्योंकि वही मुसीबतों को टालने और खत्म करने की ताकत रखता है।

जिन्दगी में इन्सान कभी बीमार भी होता है। तो जब बीमारी हो तो ईलाज कराना चाहिये। लेकिन आज कुछ मुसलमान मुसीबतों और बीमारियों से निजात पाने के लिए ऐसे तरीके अपनाने लगे है जो इस्लामी शरीयत में हराम हैं या शिर्क के दायरे में आते है। मिसाल के तौर पर अगर किसी पर जादू किया गया और जादूगर जादू कर सकता है। लेकिन जादू को खत्म करने के लिए जादूगरों के पास जाना इस्लाम में मना है। जादू का ईलाज कुरआन और हदीसे रसूल सल्ल. की रोशनी में करना चाहिये।

तआवीज़, गन्डे, छल्ले, कड़े और धागों का इस्तेमाल, अल्लाह से बेऐतेमादी पैदा करता है। चाहे उनका इस्तेमाल बच्चों के नज़रे बद लग जाने पर किया जाए या लोगों के लिए आम बीमारी और परेशानी के वक्त।

तअवीज़

इब्ने हजर रहमाहुमुल्लाह फरमाते है ''तअवीज़ से मुराद वह दाने और माला हैं जो गले में लटकाये जाते हैं इस यकीन के साथ कि ये बलाओं को टालते हैं।''इब्ने असीर रह. कहते है ''तमीमा (तअवीज़) उन मोतियों को कहते हैं जिन्हें अरब के लोग अपने बच्चों पर लटकाते थे। उनके ज़रिये वह अपने ख्याल में बच्चों को नज़रे बद से बचाते थे''। (फतह उल बारी – 166/10)

उर्दू में तअवीज़ उसे कहते हैं '' जो इस नीयत से बांधा या लटकाया जाये कि बीमारी, आसेब और नज़रे बद वग़ैरह से महफ़ूज़ रहे या ख़ैर व बरकत हासिल हो।''

झाड़ फूंक यानि दम (करना)

दम या झाड़ फूंक तीन शर्तो के साथ जायज़ है।

(1) कुरआनी आयात और अहादीस सहीहा की दुआओं से हो।
जैसेः– आयशा रज़ि से रिवायत हे कि ''नबी सल्ल. मर्ज की हालत में खुद को मऊज़तैन (सूरह फलक व नास) पढ़ कर दम किया करते थे।'' (बुखारी–5735, मुस्लिम–5994, अबु दाऊद–3852)
अबु सईद रजि. ने बिच्छू के काटने पर सूरह फातेहा से दम किया। (बुखारी–5737)

(2) अरबी या दूसरी समझी जाने वाली ज़बान में हो। इसलिये कि जो ज़बान समझी न जायेगी हो सकता है कि वह शिर्किया कलाम हो या हराम जुमले, नम्बरात हो या तिलस्म, अल्लाह के नामों से हो या फरिश्ते या शयातीन के नामों से।

(3) पूरा–पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर हो। यह झाड़ फूंक या दम ज़रिये के तौर पर इस्तेमाल करा जाये।
अगर यह तीनों शर्ते एक साथ पाई जायें तो दम या झाड़ फूंक जायज़ है वरना यह भी शिर्क होगा। (फ़तह उल बारी–195/10, मुस्लिम की शरई नौवी–93/3)
झाड़ फूंक (दम) की इजाज़त देते हुए आप सल्ल. ने फरमाया 'तुम मुझे अपने झाड़ फूक के कलिमात सुनाओं, अगर उसमे शिर्क न हो तो कोई हर्ज नहीं। (मुस्लिम 6011, अबु दाऊद 3836)

कुरआनी तअवीज़

कुरआनी आयात और मासूरा दुआओं से लिखें तअवीज़ के बारें में उलेमा की दो राय है। एक गिरोह ऐसे तअवीज़ात को जाइज़ करार देता है। इन उलेमा में सईद बिन मुसय्यब, अता, बाक़र और मालिक रह. हैं।
लेकिन दुसरे गिरोह के उलेमा ऐसे तअवीज़ात को भी जाइज़ नहीं मानते नाजाइज़ कहने वालों में इब्ने मसऊद, इब्ने अब्बास, हजीफ़ा बिन यमान, अक्बा बिन आमिर और अक़ीम रज़ि. हैं। साथ ही इमाम नखई और अहमद इब्ने हम्बल रह. भी हैं। इमाम नखई कहते है वह (सहाबा ए किराम व ताबईन रह.) हर तरह के तअवीज़ को मकरूह जानते थे। (इब्ने अबिशीबा–374/7)

(1.) रसूल सल्ल. ने कुरआन से इलाज करने का जो तरीक़ा बतलाया वह यह है कि कुरआन की तिलावत की जायें। उसके अहकाम पर अमल किया जाये और उसे पढ़कर मरीज़ पर दम किया जायें।

(2) कुरआन का तअवीज़ लटकाना कभी कुरआन की बे अदबी का सबब भी बन जाता है। जैसे बेतुल खला में उसके साथ दाखिल होना या नापाकी की हालत में पहने रहना।

बअज़ शुब्हात

जब लोगों को तअवीज़ गन्डों से रोका जाता है तो जवाब मिलता है कि हम उलैमा से तअवीज़ लेते हैं और यह बड़े–बड़े उलेमा हैं जो हमें तअवीज़ देते है। फिर यह तअवीज़ गन्डे कुरआनी आयात से बने होते हैं और कुरआन में शिफा है। फिर आप

इससे क्यो रौकते है? जबकि इससे हमे फायदा होता है। जिस मकसद के लिये हम तअवीज़ लेते है, वह मकसद हमें हासिल होता है।

शुब्हात का जवाब

(1) उलैमा का अमल दीन में हुज्जत व दलील नहीं। बल्कि दलील अल्लाह की किताब (कुरआन) और रसूल सल्ल. की सुन्नत (हदीस) है।

इर्शादे बारी तआला है ''ऐ ईमान वालों! अल्लाह की इताअत करो और उसके रसूल (सल्ल.) की बात मानो और (इनकी ना फरमानी करके) अपने आमाल बर्बाद न करों। (मुहम्मद-33)

अल्लाह तआला ने यह भी फरमाया ''बहुत से उलेमा और मशाइख लोगों का माल बातिल तरीके से खाते हैं और उन्हे अल्लाह की राह से रौकते हैं (तौबा-34)

(2) इसमे कोई शक नहीं के कुरआन में शिफा है लेकिन उस तरह जिस तरीके से रसल. सल्ल. ने बताया है जैसे के दवा में शिफा है लेकिन तब जब दवा का इस्तेमाल डॉक्टर या हकीम की सलाह के मुताबिक दिया जाये अगर उसके खिलाफ करेगे तो बजाय फायदे के नुकसान पहुंच सकता है कुरआन से तअवीज़ गन्डे के ज़रिये शिफा हासिल करने की तालीम नबी सल्ल. ने नहीं दी है बल्के इससे मना फरमाया है।

(3) यह कहना कि जो तअवीज़ गन्डे हम इस्तेमाल करते हैं वह कुरआनी आयात से बने होते हैं, सही नहीं। क्योंकि ब मुश्किल 10% तअवीज़ कुरआनी आयत से बने होते है और 90% तअवीज़ तिलस्म, नम्बरात, उल्टी-सीधी लकीरों और बे मआनी तहरीरों से बने होते हैं।

(4) यह कहना कि जिस मकसद के लिए हम तअवीज़ लेते है, हमें वह मकसद हासिल होता है, सही नहीं। क्योंकि मकसद के सही होने से जिस ज़रिये से उसको हासिल किया गया है, वह ज़रिया सही नहीं हो जाता।

जैसे कि मुश्रिक मुसीबत में अपने माबूदों को पुकारते है। उनसे हाजते तलब करते है, उनकी मदद चाहते है, उनसे बेटा-बेटी मांगते है, और उनकी मुरादे पूरी होती है। क्या हम कह सकते हे कि मुश्रिकों का अपने मअबूदों को पुकारना और उनसे हाजते तलब करना सही है। इसी तरह लोग काहिनों और ज्योतिषियों से तअवीज़ लेते है और ज़ाहिर है यह तअवीज़ शिर्कियां कलमात पर मबनी होते है। इससे उनका मकसद भी पूरा होता है। तो क्या इस तरह के तअवीज़ को सही माना जा सकता है? हरगिज़ नहीं।

आज दवा और ईलाज का आम रिवाज़ है। इसके बावजूद कुछ लोग तअवीज़-गन्डे का सहारा लेते है। चाहे बीमारी जिस्मानी हो या नफसानी। हालांकि रसूल सल्ल. ने दवा लेने और ईलाज कराने की तालीम दी है। फरमाया कि ''ऐ अल्लाह के बन्दों! दवा करों। अल्लाह तआला ने जितनी बीमारियां पैदा की है, उनके लिये दवा भी पैदा फरमाई है। सिर्फ बुढ़ापे का कोई ईलाज नहीं।''
(बुखारी-5678, अबु दाऊद 380, तिर्मिजी-1854)

तअवीज़ गन्डा देने वाले

(1) तअवीज़-गन्डे देने वाले कुछ लोग जिन्न व शयातीन को खुश करने वाले होते है। वह मुख़तलिफ चिल्ले काट कर जिन्न व शयातीन को अपनी इस तिजारत के लिये

इस्तेमाल करते है। उन्हे खुश रखने के लिये वो सब करते है। जिन से शिर्क लाज़िम आता है। इन्ही जिन्नों के सहारे और कभी अपनी शोअबदेबाज़ी के ज़रिये मुरीदों पर यह ज़ाहिर करते है कि उन्हे माज़ी, हाज़िर ओर मुस्तकबिल (भूत, वर्तमान ओर भविष्य) का इल्म है।

हालाकि अल्लाह तआला का इर्शाद है, अल्लाह ही के पास गेब की चाबियां है। उसके अलावा गेब (की बाते) कोई नहीं जानता। (अनआम–59)

यह लोग जिन बातों की ख़बर देते है वह शैतानी हरकत का असर होता है।

क्योकि '' यकीनन शयातीन अपने दोस्तों पर इल्का करते है।'' (अनआम–121)

आयशा रज़ि. से रिवायत है कि कुछ लोगों ने नबी सल्ल. से काहिनों के बारे में पूछा तो आप सल्ल. ने फ़रमाया वह कुछ नहीं है। लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल. किसी वक्त तो वोह सही बात बता देते है। आप (सल्ल.) ने फ़रमाया ''उस सही बात को कभी कोई जिन्न (आसमान से सुनकर) ले उड़ता है और जाकर अपने दोस्त के कान में डाल देता है। फिर वो उसमें सौ झूठ की मिलावट कर देते है।'' (बुख़ारी–5762, 3210,मुस्लिम–6091)

(2) कुछ तअवीज़–गन्डा देने वाले (अपने ज़ेरे असर) लोगों को अक्सर गैरूल्लाह के नाम की नज़रो–नियाज़ की तल्क़ीन करते हैं, कि हाजत पूरी–होने के बाद फलां बाबा के नाम मुर्ग़ा, फलां बाबा के नाम की चादर और फलां के नाम का फ़ातिहा दे देना। और लोग उनके फ़रेब में आकर शिर्क कर–बैठते हैं। जान रखो! नज़रों–नियाज़ इबादत है, जो सिर्फ़ अल्लाह के लिये ही जाइज़ है।

इर्शादे बारी तआला है ''कहो! यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी इबादतें, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह ही के लिये है। जो सारे जहान का पालने वाला है उसका कोई शरीक नहीं (अनआम–162)

इसी तरह ''अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और उसी के लिये क़ुर्बानी दो।'' (कौसर–02)

नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''अल्लाह की लानत हों उस पर जो अल्लाह के सिवा किसी और के लिये जानवर ज़िब्ह करें।'' (रावी अली रज़ि.–मुस्लिम–5417)

3. तअवीज़–गन्डे देने वालों में से कुछ ऐसे भी होते है जो तअवीज़–गन्डे के बहाने लोगों की इज़्ज़त से खेलते है। आम तौर पर ऐसा होता है कि किसी ओरत पर आसेब व जिन्न का शक होता है अगर ना भी हो तो ये लोग किसी भी बीमारी को आसैब़ (असर) क़रार देते और फिर इलाज के बहाने जो कुछ होता है, वह अल्लाह ही बेहतर जानता है। जिन्न को ज़िब्ह करने का दावा करते हुए नीबू कांटते है और कहते है कि इस तरह हमने जिन्न को ज़िब्ह कर दिया। जब कि होता यह है कि जिस छुरी से नीबू कांटा जाता है। उस में केमिकल लगी होती है जब उससे नीबू कटता है तो नीबू का रस सुर्ख़ हो जाता है। लोग समझते है कि जिन्न ज़िब्ह हो गया और यह उसका ख़ून है जो गिर रहा है।

रसूल सल्ल. का इर्शाद है ''मलउन (लानती) है वह शख़्स जो नुक्सान पंहुचाये किसी मोमिन को या धौखा करे उसके साथ। '' (रावी–अबु बक़र रज़ि.–तिर्मिज़ी–1758)

4. तअवीज़–गन्डा देने वालों में कुछ शरीयत से बिलकुल आरी, नमाज़ न पढ़ने और रोज़ा न रखने वाले होते है। फ़िर भी लोग उनसे पूरी अक़ीदत से तअवीज लेते है। जब कि अल्लाह तआला का फ़रमान है '' अल्लाह के दोस्त सिर्फ़ परहेज़गार (मुत्तक़ी) लोग

है। '' (अनफ़ाल–34)

तअवीज़–गन्डे के नुक्सानात

1. तअवीज़–गन्डे के ज़रिये इन्सान अक्सर शिर्क जैसे बड़े गुनाह में फंस कर बद अक़ीदगी का शिकर हो जाता है।

2. तअवीज़ की वजह से अल्लाह पर ईमान कमज़ोर पड़ जाता है। अल्लाह से भरोसा उठ जाता है और अल्लाह हर शै (चीज़) पर क़ादिर है का यक़ीन ख़त्म हो जाता है।

3. इन्सान का भरोसा और एतेक़ाद उस तअवीज़ गन्डे पर हो जाता है। वह अल्लाह के बजाये उसी को नफ़ा और नुक्सान पंहुचाने वाला मान लेता है।

4. अक्सर तक़दीर से ईमान उठ जाता है। परेशानीयों, मुश्किलात और बीमारीयों में इन्सान बजाये अल्लाह की तरफ़ रूजूअ होने, तौबा व अस्तग़फ़ार करने और तक़दीर पर ईमान रखने के शौअबदे बाज़ो के पास चला जाता है।

5. तअवीज़–गन्डे के शिकार लोग वहम के मरीज बन जाते है। हर चीज़ से डरने लगते है। शयातीन और जिन्नात का डर अल्लाह के खौफ़ पर ग़ालिब आ जाता है। हर बीमारी को जिन्न का असर और जादू समझने लगते है।

6. इसकी वजह से शौअबदे बाज़ और मक्कार लोग लोगों के माल और अक़ीदे पर हाथ साफ़ करते है। और इस जाल में फंसा शख़्स अपनी दुनिया और दीन को बर्बाद कर बैठता है।

7. तअवीज़–गन्डे के चक्कर में फंस कर इन्सान सही तरीका ए ईलाज को छोड़ देता है और दर–दर की ठोकरें खाता फिरता है।

और यह भूल जाता है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया '' अगर अल्लाह तुझे कोई तक्लीफ़ पंहुचाये तो उसका टालने वाला उसके सिवाए कोई नहीं और अगर वह तुझको कोई भलाई पंहुचाये तो वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।'' (अनआम–17)

तअवीज़–गन्डे और नबी सल्ल. और सहाबा ए किराम

जब हम अहादीस का मुताअला करते हैं तो पता चलता है कि तअवीज़–गन्डे, छल्ले, कड़े और धागे वग़ैरह का बीमारी दूर करने और मुसीबतों से निजात पाने के लिये लटकाना शिर्क और गुमराही में दाखिल होना है। और ''मुश्रिक का ठिकाना जहन्नम है। (माईदा–72)

1. इम्रान बिन हसीन रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने एक शख़्स के हाथ में पीतल का छल्ला देखा तो पूछा कि यह क्या है? उस शख़्स ने जवाब दिया कि यह कमज़ोरी दूर करने के लिए है तो आप सल्ल. ने फ़रमाया इसे उतार दें यह तेरी कमजोरी को और बढ़ायेगा। अगर इसे पहने हुए तुम्हारी मौत आगई तो तुम कभी भी फ़लाह नहीं पा सकते। '' (मुसनद अहमद)

2. अक़बा बिन आमिर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''जो शख़्स अपने गले में तअवीज़ लटकाए। अल्लाह उसकी मुराद पूरी न करे और जो शख़्स सीप वग़ैरह लटकाए, उसे आराम न दे।'' (मुसनद अहमद)

3. नबी सल्ल. का फ़र्मान है ''जिसने तअवीज़ लटकाया, उसने शिर्क किया।'' (मुसनद अहमद–154/4, मुस्तदरक हाकिम–417/4)

4. अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि मैंने नबी सल्ल. को यह फ़रमाते हुए सुना

कि (शिर्किया) ''झाड़–फूक, तअवीज् और मियां–बीवी के बीच मुहब्बत पैदा करने वाला अमल शिर्क़िया अफ़्वाल है।'' (अबुदाऊद–3833, मुसनद अहमद)

5. अब्दुल्लाह बिन अकीम रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''जो शख़्स अपने गले या बाज़ू में कोई तअवीज् या धागा लटकाता है तो वह उसी के हवाले कर दिया जाता है।''(नसाई–4085,तिर्मिजी–1888)

6. अक़्बा बिन आमिर रज़ि. से रिवायत है कि दस लोग आप सल्ल. के पास आये। आप सल्ल. ने नौ से बैअत ली और एक से बैअत न ली। लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल.! आप ने नौ से बैअत ली और एक को छोड़ दिया। (तब) आप सल्ल. ने फ़रमाया ''इसने तअवीज् लटका रखी है।'' आप सल्ल. ने हाथ बढ़ा कर तअवीज् तोड़ा फिर बैअत की और फ़रमाया ''जिसने तअवीज् लटकाया उसने शिर्क किया।'' (सिलसिला अहादिस अल सहीहा–अल बानी–492)

7. नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''जिसने गिरह में फूंका, उसने जादू किया और जिसने जादू किया, उसने शिर्क किया।'' (नसाई–4085,तबरानी)

8. हजीफ़ा बिन यमान रज़ि. जब एक मरीज् के पास उसकी अयादत के लिए गये तो देखा कि उसके गले में बुख़ार दूर करने का धागा बंधा हुआ है। (उन्होंने) उसे काट दिया और कुरआन की यह आयत तिलावत फ़रमाई। (तरजुमा) ''अक्सर लोग अल्लाह को तो मानते हैं मगर उसके साथ शिर्क करते हैं।'' (युसुफ़–106 इब्ने अबि हातिम)

9. एक दफ़ा इब्ने मसऊद रज़ि. अपने घर में दाखिल हुए तो देखा कि उनकी बीवी ज़ेनब के गले में एक धागा लटका हुआ है। जिस पर दम किया गया था। उनकी बीवी ज़ैनब रज़ि. ने कहा कि अब्दुल्लाह ने उस पकड़ कर काट दिया और फ़रमाया कि अब्दुल्लाह की आल व औलाद शिर्क से बेज़ार और बरी है।'' (मुसनद अहमद, इब्ने माजा–3530)

10.सईद बिन जबीर रह. ने फ़रमाया ''जो शख़्स किसी के गले से तअवीज् काट दे उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा।'' (इमाम वकीअ)

मुख़्तसर यह कि तअवीज् गन्डों के इस्तेमाल से बचना ही हमारे लिए बेहतर और सही है चाहे वो जैसे भी हो और नबी सल्ल. की पैरवी ही में हमारी भलाई है।

आख़िर में हर शै के मालिक और हर शै पर क़ादिर अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सब को कुरआन को समझ कर पढ़ने और उसके मुताबिक जिन्दगी गुजारने की तौफ़ीक अता फ़रमाए। हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाये और हमारें गुनाहों को माफ फ़रमाए।

आमीन या रब्बुल आलमीन।

हमारा मक़सदे हकीक़ी अल्लाह की खुशनुदी, उसके अहकाम की बजा आवरी और अल्लाह के हक़ीक़ी दीन को अपनी ताक़त भर उसके बन्दों तक पहुंचाना है।

अहले इल्म हजरात से गुजारिश है कि
हमारी गलती पर हमारी इस्लाह फ़रमाए।
शुक्रिया!
दिनांक 07/01/2009

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो.9214836639